डॉ. शरद पगारे के उपन्यासों में नारी

शोधार्थी- प्रतिभा राठौर

शोध केंद्र - श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इन्दौर

शोध सार :- हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिनके उपन्यासों में मुख्य पात्र नारी रही हैं। ऐसे ही साहित्यकार हैं डॉ. शरद पगारे । साधारणतः किसी भी उपन्यास में पुरुष एवं नारी पात्र दोनों होते हैं। कथानक, देशकाल एवं वातावरण के अनुसार ही पात्रों की सृष्टि लेखक करता हैं। पगारे जी के उपन्यासों में नारी पात्र प्रधान हैं। उन्होंने उपन्यासों में नारी के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही पक्षों का सूक्ष्मता के साथ विश्लेषण किया हैं। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उनके योगदान के महत्व को उपन्यासों में उभारने का प्रयत्न किया हैं। इसके साथ ही उनके नकारात्मक रूप के दुष्परिणामों के वर्णन से उपन्यासों की तत्कालीन समय की वास्तविकता को स्पष्टता मिलती हैं। इन दोनों रूपों का वर्णन कर , डॉ. पगारे जी ने मानव के स्वभाव की व्यापकता को पाठक वर्ग के समक्ष उद्घाटित किया हैं। भारतीय संस्कृति में आरंभ से ही नारी को देवीय रूप का दर्जा दिया जाता है। नारी कहीं आदर्श नारी है तो कहीं गलत मार्ग का चयन कर विद्रोहिणी का रूप धारण कर लेती है, कहीं वह दूसरे की संतान को अपनाकर यशोदा मां बन जाती है तो कहीं स्वयं की पैदा की गयी संतान को ठुकरा कर, स्वार्थी बन जाती है। डॉ. पगारे जी ने इन दोनों ही प्रकार के स्वभाव का वर्णन निष्पक्षता के साथ किया है।

बीजशब्द :- नारी, संस्कृति, समाज, संघर्ष, ममता, प्रतिष्ठा, प्रतीक ।

प्रस्तावना :- वर्तमान में साहित्य का सृजन विभिन्न विधाओं में किया जा रहा है। जिसमें साहित्यिक विधाओं के रूप में गद्य एवं पद्य दोनों रूपों का प्रयोग किया जा रहा है। प्रत्येक लेखक अपनी सृजन शक्ति के अनुसार विधा का चयन कर अपने मन के भावों को कागज पर उकेरता है। कहा जाता है कि हर साहित्यकार की एक पसंदीदा विधा होती है या यूं कहे की विधा अपने साहित्यकार का चयन स्वयं करती है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास नामक विधा की धूम आधुनिक काल या गद्य काल के आरंभ से ही रही है। जिसमें विभिन्न विषयों, समस्याओं और मुद्दों को ध्यान में रखकर रचनाकारों ने अपनी लेखनी चलायीं। उपन्यास के उन्मेष काल से अद्यतन काल तक के उपन्यासों की विषय और शैली दोनों में अंतर आया है। वर्तमान काल में उपन्यास साहित्य कल्पना के प्रभाव से परिपूरित होकर लिखे जा रहे हैं। ऐसे उपन्यासों में जिनमें कल्पना का आधिक्य रहता है इतिहास से संबंधित होते हैं और इन उपन्यासों को ऐतिहासिक उपन्यासों का दर्जा दिया जाता है। ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा को बढ़ाने में खंडवा में जन्मे डॉ . शरद पगारे जी का विशेष योगदान रहा हैं। उनके उपन्यासों में कल्पना एवं इतिहास का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इन्होंने इतिहास के मलबे में दबे पात्रों को निकालकर पुनः जीवित करने का प्रयास किया है। जब हम भारतीय इतिहास के मध्यकाल पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि इस काल में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय रही । मध्यकाल के इतिहास से नारी पात्रों को

इस प्रकार निकालकर फेंक दिया गया है जैसे कि दूध से मक्खी। लेकिन शरद पगारे जी ने इतिहास के इन नारी पात्रों से दुर्भावना न रखते हुए इन्हें शहद देने वाली मधुमक्खियों के समान बताया है। किसी भी समाज की उन्नति में नारी की सहभागिता का महत्वपूर्ण स्थान हैं। डॉ. शरद पगारे के उपन्यासों में नारी के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों का वर्णन किया गया हैं। इसके साथ ही समाज में नारी की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। डॉ. पगारे जी ने अपने उपन्यासों में नारी को सशक्त एवं आत्मनिर्भर व्यक्त किया हैं किंतु कहीं पर उसे दुर्बल एवं पुरुष पर निर्भर चित्रित किया हैं। पगारे जी ने नारी के दोनों ही रूपों का वर्णन बड़ी तटस्थता के साथ किया है।

शरद पगारे जी ने स्त्री को केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित न रखकर उसे संघर्षशील, स्वाभिमानी, राजनीतिक चेतना से संपन्न तथा परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है । उन्होंने नारी के विविध रूपों - माता, पत्नी , प्रेमिका , वीरांगना, त्यागमूर्ति , विद्रोही , समाज सुधारक स्त्री इत्यादि का सुक्ष्म रूप से विश्लेषण किया है। उनके उपन्यासों की नारी पात्र भारतीय संस्कृति की परंपरा और आधुनिक चेतना के समन्वित रूप को प्रस्तुत करती है। परंपरा एवं आधुनिकता का ऐसा संतुलन विरले ही साहित्यकारों में दिखाई देता हैं। 'पाटलिपुत्र की साम्राज्ञी' उपन्यास की मुख्य पात्र धर्मा एक सशक्त नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। उसकी राजनीतिक क्षेत्र में हिस्सेदारी, आत्मनिर्भरता एवं अपनी कर्तव्यों के प्रति जागरूकता को स्पष्ट करती हैं। माता और एक वीरांगना

के रूप में एक स्त्री की झांकी का मनोहर चित्रण पाटलिपुत्र की साम्राज्ञी हैं। उदाहरण के लिए जब धर्मा शासन की बागडोर अपने हाथ में लेकर सिंहासनारूढ होती है तब उसका मंत्री खल्लाटक उसकी उदारता और महानता का परिचय देते हुए कहता है "महादेवी तो स्वयं सक्षम है। प्रभु ने स्वामिनी को स्वप्न साकार करने योग्य सबल भुजाएं दी हैं और योजना बनाने को उर्वर मस्तिष्क । दास ने तो आदेशों - निर्देशों का पालन भर किया है।"[1] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि धर्मा अपने राज्य की चहेती रानी थी जो अपनी दूरदर्शिता एवं प्रेम के कारण अपनी प्रजा के मन - मस्तिष्क में अपनी अमिट छाप बनाए हुए थी।

मध्यकाल के युग में जब नारी की स्थिति प्रत्येक वर्ग ,धर्म, जाति आदि में अत्यंत दयनीय थी। एक ऐसा काल जिसमें नारी को केवल भोग विलास की वस्तु समझा जाता था। उसके सामने पर्दे की दीवार खड़ी की जाती थी और उसका पुरुष समाज के मध्य कुछ भी कहना अपराध से खाली नहीं था। इसी समय को अभिव्यक्त करते हुए पगारे जी ने 'गुलारा बेगम' उपन्यास में नूरजहां को एक सशक्त और निडर स्त्री के रूप में चित्रित किया है जो हिंदुस्तान के बादशाह के साथ कदम से कदम मिलाकर राजनीति में उसका सहयोग करती है। जिसकी सलाह के बगैर बादशाह कोई भी निर्णय नहीं लेता उदाहरण के लिए जब एक युद्ध में बादशाह जहांगीर स्वयं ही लड़ने के लिए तैयार होते हैं तब नूरजहां उनको समझाते हुए कहती है "एक चींटी को मसलने के लिए हुज़ूर गजराज का इस्तेमाल करना चाहते है ? नही - नही जहांपनाह ! मैं इसकी राय आपको नही

दे सकती। फिर यह ठीक भी नही होगा मेरे हुजूर, कि सारे हिन्दोस्तान का मालिक एक अदना फौजदार से लड़ने पहुंचे । शहजा़दा खुर्रम आपके हुजूर की खिदमत में है। तब हम आपको कैसे तकलीफ़ उठाने दे सकते हैं?"[2] दोनों उपन्यासों के उदाहरण से स्पष्ट होता है कि लेखक ने नारी पात्रों की राजनीति में सक्रिय भागीदारी को दर्शाया गया है।

कला और संस्कृति किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती हैं। जिसके सहारे वहां का कलात्मक एवं सांस्कृतिक ढांचा खड़ा हुआ है। इसी कला और संस्कृति को सहेजकर भावी पीढ़ियों में हस्तांतरित करने के लिए कई प्रकार की युक्त का उपयोग किया जाता रहा है। इसके लिए कभी साहित्य, कभी चित्रकला, कभी संगीतकला, कभी मूर्तिकला तो कभी नृत्यकला का सहारा लिया गया। प्राचीन काल से मध्यकाल तक आते-आते दो संस्कृतियों के सांस्कृतिक टकराहट से उत्पन्न नवीन संस्कृति ने भारत की धरा पर अपने पैर पसारे। कला और संस्कृति के संरक्षण में राजाश्रयों की महती भूमिका रही है। राज दरबार में प्रत्येक कला के संरक्षण एवं विस्तार के लिए एक कलाकार का स्थान निर्धारित था, गायन के लिए गायक, वादन के लिए वादक और नृत्य के लिए नृत्यांगनाओं को रखा जाता था। प्राचीन काल में कलाकारों को विभिन्न पदों पर सुशोभित किया जाता था। प्राचीनकाल में राज्य में राजनर्तकी का एक प्रतिष्ठित पद होता था । यह राजनर्तकियां कला एवं संस्कृति की परिचायक होती थी। इनका कर्तव्य प्रजा में संस्कृति के प्रति चेतना जागृत करना होता था। राजनर्तकी के पद के लिए योग्य

कन्या की नियुक्ति तथा सेवानिवृत्ति का भी प्रावधान तत्कालीन समय में रहता था। उपन्यास 'बुद्ध जनपद कल्याणी : आम्रपाली' में पात्र आम्रपाली एक ऐसी नारी पात्र है, जो संस्कृति को आगे बढ़ाने तथा जनमानस में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने के कर्तव्य का निर्वाह करती है। "आम्रपाली के सुरीले कंठ ने वीणा के साथ शास्त्रीय राग - रागनियो पर आधारित भक्ति रस से ओतप्रोत भजन प्रस्तुत कर शारंगदेव की आत्मा को अवगाहित कर दिया।"[3]

प्राचीनकाल में जिस राजनर्तकी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था मध्यकाल तक आते-आते उसकी अस्मिता में बट्टा लगने लगा था और वह सम्मानित पद से गिरकर तवायफ कहाने लगी। जिसका पेशा भोग विलास से संलिप्त नागरिकों को मनोरंजित करना था। लेकिन यह तवायफें मात्र मनोरंजन का साधन न होकर संस्कृति के संवाहिका के रूप में कार्यरत थी। उपन्यास 'बेगम जैनाबादी' में पात्र हीराबाई एक तवायफ थी। तवायफों को केवल मनोरंजनकर्ता नहीं थी बल्कि वे शास्त्रीय संगीत की परंपराओं की संवाहक रही हैं।" ... हे.. री.. मैं तो.. प्रेम.. दीवाणी.. म्हारो... दरद... न.. जा.. णे.. को.. य.. हे..री... साजो के साथ रसूलन की दर्दीली आवाज और हीरा के नृत्य - अभिनय ने जल्द ही समां बांध दिया। कृष्ण के प्रति प्यार, समर्पण को कत्थक के जरिए भाव विभोर हीरा जिस तरह पेश कर रही थी वह अनुपम था।"[4]

पगारे जी की नायिकाओं ने केवल कला एवं संस्कृति का संरक्षण ही नहीं किया बल्कि सामाजिक स्तर पर भी पुरुष प्रधान समाज में अपनी सक्रिय स्थिति

दर्ज कराई। 'उजाले की तलाश' उपन्यास में नारी पात्र लतिका उद्योगपति रमापत की इकलौती संतान रहती है। लतिका नक्सलवादी आंदोलन में आगे बढ़कर भाग लेती है। वह आदिवासियों के साथ होने वाले शोषण का विरोध करती है। “पुलिस विभाग में नौकरी करने वाले उनके छात्र ने सूचित किया कि भूषणम एक खतरनाक और प्रसिद्ध नक्सली नेता हैं। उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर पचास हजार का इनाम घोषित है। पुलिस को उसकी तलाश है। लतिका - सुरेंद्रन उसी के दल में हैं। नक्सली गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भागीदारी निबाह रहे हैं।"[5] स्पष्ट है कि सामाजिक स्तर पर किसी भी वर्ग के साथ होने वाले शोषण के विरोध में नारी भी अपनी अहम् भूमिका निभा रही हैं।

नारी को प्रेम, त्याग , संघर्ष की प्रतिमूर्ति माना जाता हैं। पगारे जी के उपन्यासों में नारी के यह रूप चित्र बनकर पाठक के सामने उपस्थित होते हैं जो अपने त्याग एवं संघर्ष की गाथाओं को बेझिझक समाज के सामने रखते हैं । 'बेगम जैनाबादी' उपन्यास में लेखक ने लाजवंती के माध्यम से नारी की संघर्ष कथा का बखान किया है। यह संघर्ष एक स्त्री, एक पत्नी और एक माता का संघर्ष है जिसमें लाजवंती अपने स्त्रीत्व और पत्नित्व को दरकिनार कर मातृत्व को प्रश्रय दिया। वह एक पत्नी के तौर पर भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। जिसकी खुशी अपने पति की खुशियों में निहित होती है। लाजवंती ने अपने पति के द्वारा अन्य स्त्री रखने के बाद भी अपने पतिव्रत धर्म का पालन किया और मुस्कुराते हुए अपनी सौत को अपना लिया। "जब शबनम ने बेटी को जन्म

दिया तो लाजवंती ने कपड़े, जेवर, फल, मिठाई आदि भिजवाए । उसने परिस्थिति से समझौता कर लिया।"[6] स्पष्ट है कि लाजवंती, शबनम एवं उसके पति की संतान को भी अपना लेती है। पात्र 'मलिकाबानू' भी ऐसी नारी पात्र है जो एक पतिव्रता नारी है तथा पत्नी होने के धर्म का पालन करते हुए, वह अपने पति को सही मार्ग चुनने की सलाह देती है।

नारी के नकारात्मक रूप का वर्णन भी डॉ. पगारे ने किया है। उनके उपन्यासों में कुछ ऐसे भी नारी पात्र है जो स्वार्थी, क्रूर, ममता एवं त्याग के स्थान में अहंभाव तथा उनके स्वभाव में प्रबल प्रतिशोध की भावना है। पगारे जी द्वारा नारी के उस रूप का चित्रण करने का उद्देश्य समाज के यथार्थ को उजागर करना है। श्यामली एक ऐसी नारी पात्र है जो अपने स्वार्थ अर्थात् काम - वासना की पूर्ति के लिए अपने पुत्र को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ चली जाती है। वह अपने नारी होने के ममत्व भाव को भूलकर शर्वलिक (पात्र) के साथ स्वच्छंद विचरण करने लग जाती है। "शर्वलिक के प्रभाव में मुग्धा श्यामली एक रात हरिसेन को सुरा की निद्रा में बेसुध छोड़कर कभी न लौटने के लिए उसके साथ भाग खड़ी हुई। उसके उद्दाम काम- वासना को पुत्र गंधर्वसेन का ममत्व भी रोक नहीं पाया।"[7]

उपन्यास 'पाटलिपुत्र की साम्राज्ञी' में कोमला एक ऐसी नारी पात्र है जो विषकन्या रहती है। नारी को जन्मदायिनी माना जाता है किन्तु कोमला, नारी का

नकारात्मक रूप है। वह अपने शारीरिक सौंदर्य से पुरुषों को आकर्षित कर, उन्हें मौत के मुंह में डाल देती है।

'उजाले की तलाश' उपन्यास में पात्र माया देवी इतनी महत्वाकांक्षी नारी है, जो पद - प्रतिष्ठा के लालच में अपने मां होने के कर्तव्य से ही विमुख हो जाती है। वह अपना समय अपनी बेटी को सही दिशा दिखाने में न लगाने के बजाय स्वयं को सुंदर दिखाने एवं किटी पार्टियों की रौनक बनने में अपना समय देती है। "मां माया देवी महिला मंडलों, किटी पार्टियों में व्यस्त रहती । .... लेडीज क्लब के कुछ सदस्यों से कहती कि वह इस उम्र में भी अपनी बेटी से ज्यादा हसीन है।"[8] माया दैहिक सौंदर्य एवं आकर्षण के सामने, अपने दायित्वों को भूल जाती है।

'बेगम जैनाबादी' उपन्यास में पात्र रोशनआरा एक ऐसी नारी है, जो स्वार्थी , क्रूर एवं ममत्वहीन है। वह नौकरों का उपयोग करके, उन्हें फेंक देती थी तथा जो उसका विरोध करता, वह उसे भी मौत के घाट उतार देती थी। "हरम के अय्याशी भरे माहौल का असर होना लाजिमी था। ..... रोशनआरा को किसी बात से परहेज न था। ... इतनी दबंग और चालक थी कि अमर जैसे छोकरों, हट्टी - कट्टी बांदियो - कनीज़ों का उपयोग करने के बाद भी उन्हें अपने पर हावी नहीं होने देती। यदि कोई कोशिश करता तो दूसरे ही दिन उसकी लाश जमुना में तैरती मिलती।"[9] जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। एक मास के दो पक्ष होते हैं उसी प्रकार किसी भी स्त्री या पुरुष के भी दो रूप होते हैं। इन रूपों को उजागर

करने में पगारे जी ने तनिक भी संकोच नहीं किया हैं। अपनी दो-टूक भाषा के माध्यम से लेखक ने स्त्री जीवन के भले- बुरे फोटोग्राफ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए हैं।

<u>निष्कर्ष</u> :- डॉ. शरद पगारे के उपन्यासों में नारी के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं। उनके उपन्यास सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। उनके उपन्यासों में नारी केवल सहायक पात्र नहीं होती जो कि कथा के विस्तार में सहयोग करती है बल्कि वह उपन्यास की केंद्रीय सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित हो, उपन्यास की कथा को परिमार्जित भी करती है। पगारे जी ने स्त्री के अनेक रूपों को चित्रित किया है। उन्होंने नारी को ममता, त्याग, संघर्ष ,प्रेम, विद्रोह , सामाजिक चेतना इत्यादि के प्रतीक के रूप में नारी का चित्रण किया है। मां के रूप का अत्यंत संवेदनशील भावपूर्ण और त्यागमयी चित्र लेखक ने अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य के पृष्ठों पर उकेरा है। पगारे जी के उपन्यासों की मां अपने परिवारों एवं संतानों के लिए हर कष्ट सहने को तैयार रहती है। मातृत्व को उन्होंने स्त्री की सबसे बड़ी शक्ति माना हैं। वही स्त्री जब एक पत्नी या ग्रहिणी के रूप में पति की सहयोगिनी, प्रेरक और संकट में सहचरी के रूप में दिखाई देती है। वह केवल गृहस्थी संभालने वाली नहीं बल्कि पति के निर्णयों को दिशा देने वाली बुद्धिमती स्त्री भी हैं। लेखक ने प्रेमिका के रूप में भी स्त्री की भावुकता, संवेदनशीलता और निष्ठा को चित्रित किया है। जिसका प्रेम केवल आकर्षण नहीं बल्कि आत्मिक जुड़ाव एवं समर्पण का रूप है। निष्कर्षत:

हम कह सकते हैं की पगारे जी के उपन्यासों की स्त्री सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक इत्यादि स्तरों पर अपने सशक्त और विलासी दोनो स्वरूपों को अभिव्यक्त करती है।

<u>संदर्भ सूची</u> :-

1. पाटलिपुत्र की साम्राज्ञी, डॉ. शरद पगारे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.क्र. - 14

2. 'गुलारा बेगम', डॉ. शरद पगारे, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. , नयी दिल्ली, पृ. क्र. 27

3. ' बुद्ध - जनपद कल्याणी: आम्रपाली गाथा', डॉ. शरद पगारे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. क्र. 85

4. बेगम जैनाबादी, वहीं, पृ. क्र. 192

5. उजाले की तलाश, वहीं, पृ. क्र. 178 -179

6. बेगम जैनाबादी, वही, पृ. क्र. 88-89

7. गंधर्वसेन, वही, पृ. क्र. 74

8. उजाले की तलाश, वही, पृ. क्र. 87-88

9. बेगम जैनाबादी , वही , पृ. क्र. 121